UNIT 3: उत्पादक का व्यवहार एवं पूर्ति (PART 3)

पूर्ति एवं पूर्ति की लोच (Supply & Elasticity of Supply)

पूर्ति का अर्थ (Meaning of Supply)

किसी वस्तु की पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उन मात्राओं से हैं जिन्हें एक विक्रेता विभिन्न संभव कीमतों पर एक निश्चित समय में बेचने को तैयार रहता है।

परिभाषाएं (Definitions):

थॉमस के अनुसार, "वस्तुओं की पूर्ति वह मात्रा है जो एक बाजार में किसी निश्चित समय पर विभिन्न कीमतों पर बिकने के लिए प्रस्तुत की जाती है"।

पूर्ति के प्रकार (Types of Supply)

1. व्यक्तिगत पूर्ति (Individual Supply)
2. बाजार पूर्ति (Market Supply)

व्यक्तिगत पूर्ति (Individual Supply)

वस्तु की वह मात्राएँ जिन्हें एक विक्रेता विभिन्न संभव कीमतों पर एक निश्चित समय पर बेचने को तैयार रहता है व्यक्तिगत पूर्ति कहते हैं।

बाजार पूर्ति (Market Supply)

किसी वस्तु की बाजार में सभी उपस्थित फर्मो द्वारा या विक्रेता के द्वारा की गयी पूर्ति जो उस वस्तु का उत्पादन यह बिखरे करती है बाजार पूर्ति कहलाती है। बाजार पूर्ति को उद्योग पूर्ति भी कहा जाता है।

पूर्ति तालिका (Supply Schedule)

विभिन्न कीमतों पर बाजार में वस्तु की बेची जाने वाली मात्राओं को यदि तालिका में व्यक्त कर दिया जाए तो इससे पूर्ति तालिका कहते हैं।

पूर्ति तालिका दो प्रकार की होती है:

1. व्यक्तिगत पूर्ति तालिका
2. बाजार पूर्ति तालिका

व्यक्तिगत पूर्ति तालिका (Individual Supply Schedule)

एक विक्रेता किसी समय अवधि विशेष में विभिन्न कीमतों पर वस्तुओं की जितनी मात्रा बाजार को बेचने को तैयार रहता है, उसे यदि तालिका के रूप में प्रदर्शित किया जाये तो उसे हम व्यक्तिगत पूर्ति तालिका कहते हैं।

वस्तु की कीमत प्रति इकाई (₹)	पूर्ति मात्रा (Q)
2	10
4	20
6	30
8	40
10	50

बाजार पूर्ति तालिका (Market Supply Schedule)

बाजार में सभी फर्में अथवा विक्रेता मिलकर विभिन्न कीमतों पर बाजार में कुल कितनी मात्रा बेचने को तैयार है, इसका निर्धारण एक तालिका में प्रदर्शित बाजार पूर्ति तालिका करती है।

इस प्रकार बाजार पूर्ति तालिका सभी प्राय बाजार में किसी वस्तु का उत्पादन या आपूर्ति करने वाली सभी फर्मो की पूर्ति के जोड़ से है।

प्रति इकाई कीमत	विक्रेता A	विक्रेता B	बाजार पूर्ति (A +B)
2	10	5	15
4	20	10	30
6	30	15	45
8	40	20	60
10	50	25	75

पूर्ति वक्र (Supply Curve)

पूर्ति तालिका का वक्र के माध्यम से प्रदर्शित करना पूर्ति व कहलाता है।

पूर्ति वक्र दो प्रकार का होता है:

1. व्यक्तिगत पूर्ति वक्र
2. बाजार पूर्ति वक्र

व्यक्तिगत पूर्ति वक्र (Individual Supply Curve)

व्यक्तिगत पूर्ति तालिका को वक्र पर प्रदर्शित करने पर व्यक्तिगत पूर्ति वक्र प्राप्त होता है।

कीमत प्रति इकाई (₹)	पूर्ति मात्रा (Q)
2	10
4	20
6	30
8	40
10	50

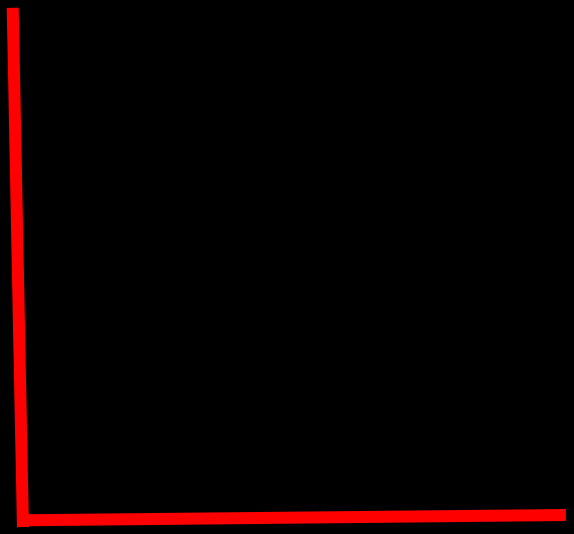

बाजार पूर्ति वक्र (Market Supply Curve)

बाजार पूर्ति तालिका को ग्राफ पेपर पर अंकित करके बाजार पूर्ति बक्र प्राप्त किया जा सकता है।

प्रति इकाई कीमत	विक्रेता A	विक्रेता B	बाजार पूर्ति (A +B)
2	10	5	15
4	20	10	30
6	30	15	45
8	40	20	60
10	50	25	75

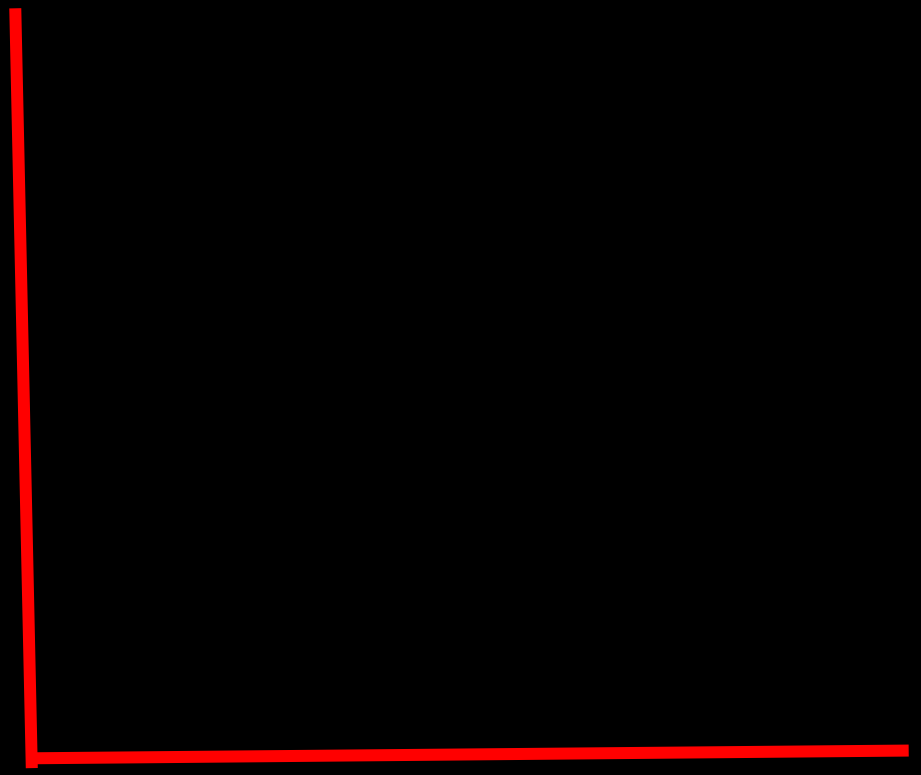

पूर्ति फलन या पूर्ति को निर्धारित करने वाले घटक

वस्तु की पूर्ति एवं इसके निर्धारक तत्वों के बीच कार्यात्मक संबंध को पूर्ति फलन कहा जाता है।

Sx = f(Px, Pr, Pf, T, N, G, Ex, Gp)

Px - वस्तु की कीमत;

Pr - संबंधित वस्तुओं की कीमत;

Pf - उत्पादन साधनों की कीमत;

T - उत्पादन तकनीक;

N - फर्मो की संख्या

G - फर्म का उद्देश्य;

Ex - भविष्य में संभावित कीमत;

Gp - सरकारी नीति

पूर्ति का नियम (Law of Supply)

पूर्ति के नियम के अनुसार, अन्य बातें सामान्य रहने पर वस्तु की कीमत वृद्धि पूर्ति को बढ़ाएगी तथा वस्तु कीमत में कमी पूर्ति को घटाएगी।

इस प्रकार वस्तु की कीमत तथा वस्तु की पूर्ति में प्रत्यक्ष और सीधा संबंध पाया जाता है।

प्रो. मार्शल के अनुसार, "पूर्ति का नियम यह बताता है कि अन्य बातें समान रहने पर जितनी कीमत अधिक होती है, उतनी ही पूर्ति अधिक होती है। इसके विपरीत वस्तु की कीमत जितनी कम होती है, उसकी पूर्ति भी उतनी ही कम होती है"

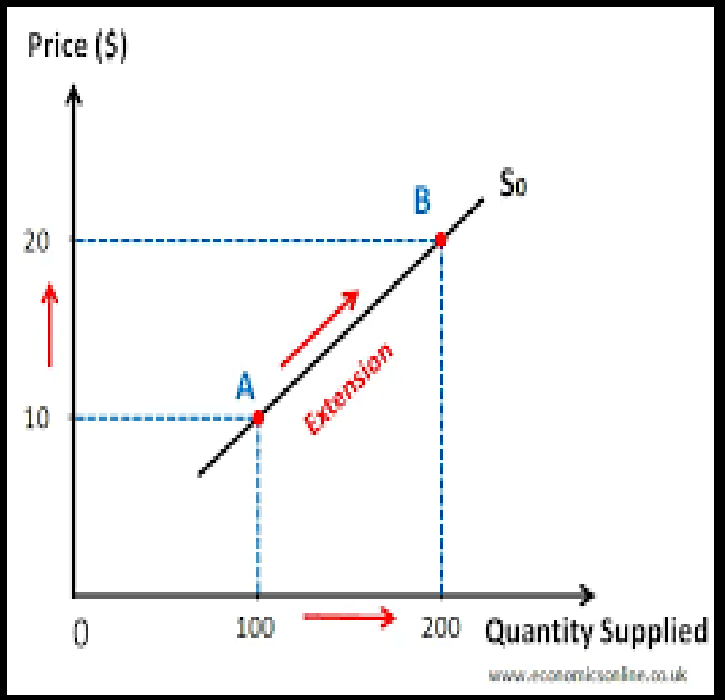

पूर्ति के नियम की मान्यताएँ

1. बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की आय स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
2. स्थानापन्ननो की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होने चाहिए।
3. उत्पत्ति के साधनों की कीमत स्थिर रहनी चाहिए।
4. तकनीकी ज्ञान का स्तर स्थिर रहना चाहिए।
5. सरकारी नीती में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
6. क्रेता तथा विक्रेता की रूचि, आदत, फैशन आदि में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

पूर्ति के नियम के अपवाद

- कृषि वस्तुओं पर यह नियम अनिवार्य रूप से लागू नहीं होता।
- नाशवान वस्तुओं पर पूर्ति का नियम लागू नहीं होता।
- सामाजिक प्रतिष्ठा वाली वस्तुओ में भी यह नियम लागू नहीं होता।

पूर्ति में परिवर्तन (Change in Supply)

पूर्ति में परिवर्तन मुख्य रूप से दो कारणों से होता है:

1. कीमत में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र पर संचलन
2. कीमत के अतिरिक्त अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र का खिसकाव

कीमत में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र पर संचलन

अन्य बातें सामान रहने पर कीमत में परिवर्तन होने से पूर्ति में परिवर्तन होते रहते हैं। यह परिवर्तन पूर्ति के नियम के अनुरूप होते है, जैसे कीमत में कम होने पर पूर्ति में कमी और कीमत के बढ़ने पर पूर्ति में वृद्धि।

यह परिवर्तन दो प्रकार से होता है:

पूर्ति का विस्तार और पूर्ति का संकुचन

पूर्ति का विस्तार (Extension of Supply)

अन्य बातें सामान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ जाती है तो इस बढ़ती हुई पूर्ति को पूर्ति का विस्तार कहते हैं। इस अवस्था में पूर्ति वक्र ऊपर की ओर संचलित होता है।

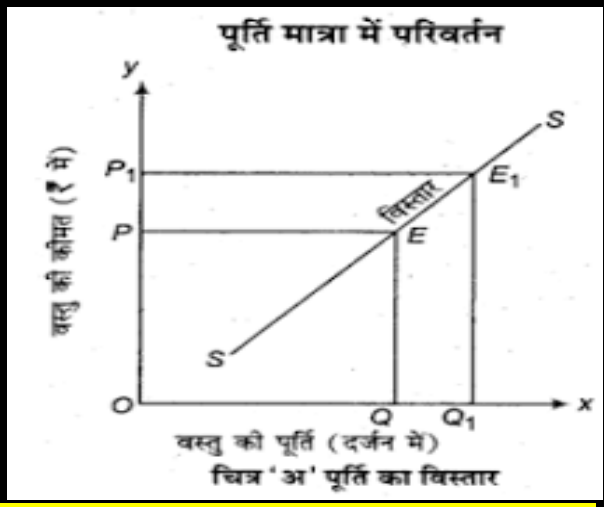

चित्र 'अ' पूर्ति का विस्तार

पूर्ति का संकुचन (Contraction of Supply Curve)

अन्य बातें सामान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत के कम होने के फलस्वरूप उसकी पूर्ति कम हो जाती है तो पूर्ति में होने वाली कमी को पूर्ति का संकुचन कहते हैं। इस अवस्था में पूर्ति बकरे नीचे की ओर संचालित होता है।

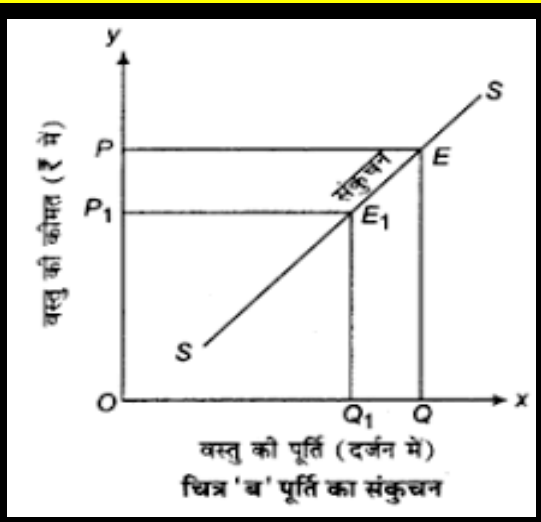

चित्र 'ब' पूर्ति का संकुचन

कीमत के अतिरिक्त अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र का खिसकाव

कीमत के अतिरिक्त अन्य कारक यह तत्व जैसे तकनीकी सुधार, यातायात के साधनों का विकास, आय में वृद्धि आदि में परिवर्तन होने पर वस्तु में भी परिवर्तन होता है। इस प्रकार की परिवर्तन से पूर्ति वक्र अपने स्थान से दायें या बाईं ओर खिसक जाता है।

- तकनीकी प्रगति
- उत्पादन साधनों की कीमतों में कमी
- स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतों में कमी
- उत्पादकों के उद्देश्य में परिवर्तन
- उद्योग में फर्मो की संख्या में वृद्धि
- भविष्य में कीमत घटने की संभावना
- करों में कमी
- अनुदान में वृद्धि

यह परिवर्तन दो प्रकार से होता है:

पूर्ति में वृद्धि तथा आपूर्ति में कमी

पूर्ति में वृद्धि (Increase in Supply)

बस्तु की कीमत सामान रहने पर यदि किसी वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है या कीमत कम होने पर पूर्ति सामान रहती है तो दोनों ही परिस्थितिया पूर्ति में वृद्धि को बताता है।

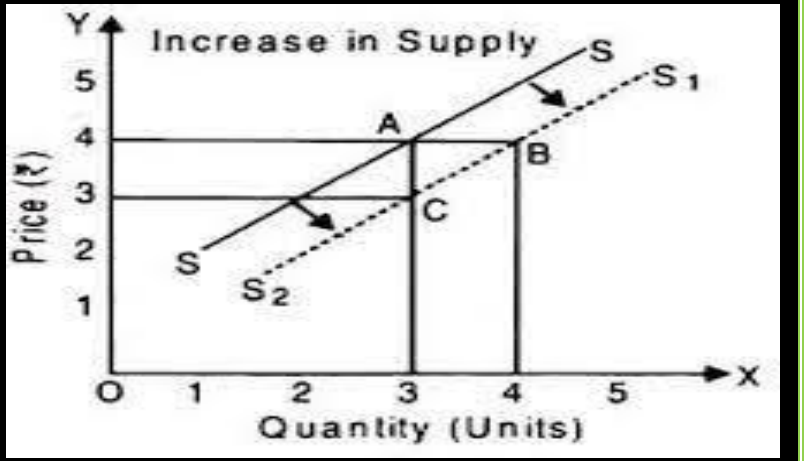

पूर्ति में कमी (Decrease in Supply)

वस्तु की कीमत सामान रहने पर यदि किसी बस्तु की पूर्ति कम हो जाती है अथवा कीमत बढ़ने पर भी पूर्ति सामान्य रहती है तो इस परिवर्तन को पूर्ति में कमी कहा जाता है।

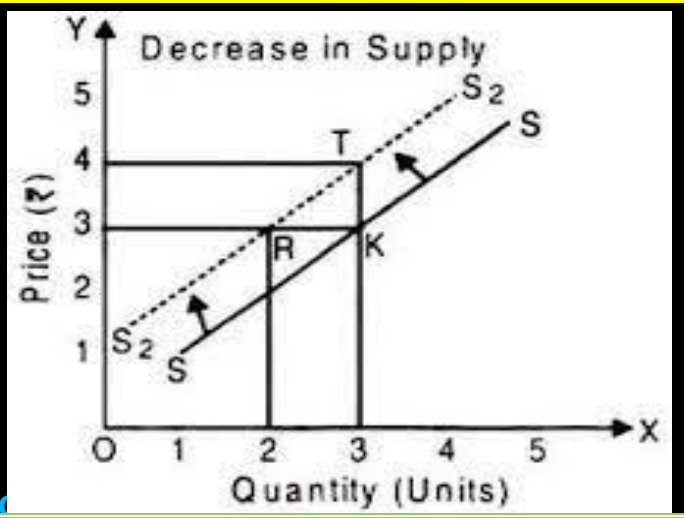

पूर्ति की लोच (Elasticity of Supply)

अर्थ:

पूर्ति की लोच किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी पूर्ति में होने वाले परिवर्तन की माप है।

परिभाषाएं

मार्शल के अनुसार, "पूर्ति की लोच से अभिप्राय कीमत में परिवर्तन के प्रतिक्रिया स्वरुप पूर्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तन से होता है"।

पूर्ति की कीमत लोच किसी वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन के कारण आपूर्ति में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन की माप है।

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{वस्तु की पूर्ति में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

पूर्ति की लोच के प्रकार/ श्रेणियां

पूर्ति लोच की श्रेणियों को पांच भागों में बांटा जा सकता है:

1. पूर्णतया लोचदार पूर्ति ($Es = \infty$)
2. इकाई से अधिक लोचदार पूर्ति ($Es > 1$)
3. इकाई लोचदार पूर्ति ($Es = 1$)
4. इकाई से कम लोचदार पूर्ति या बेलोचदार पूर्ति ($Es < 1$)
5. पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति ($Es = 0$)

पूर्णतया लोचदार पूर्ति (Es = ∞)

जब कीमत में परिवर्तन ना होने पर भी अथवा अत्यंत सूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है। तब वस्तु की पूर्ति लोच पूर्णतः लोचदार होती है।

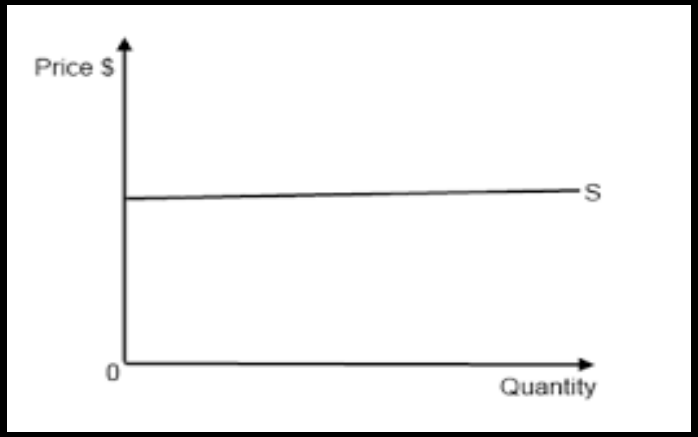

इकाई से अधिक लोचदार पूर्ति (Es > 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से अधिक होता है, तब पूर्ति की लोच इकाई से अधिक होती है।

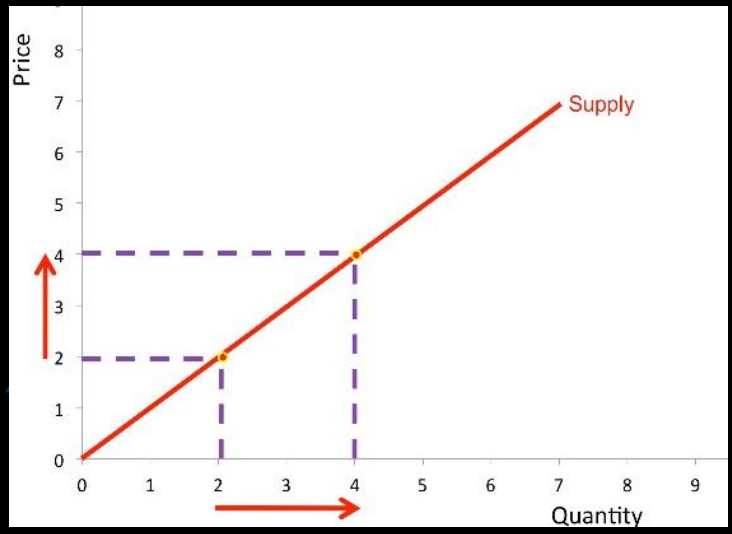

इकाई लोचदार पूर्ति (Es = 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में ठीक उसी अनुपात में परिवर्तन होता है जिस अनुपात में कीमत परिवर्तन हुआ है तब वस्तु की पूर्ति लोच इकाई के बराबर होती है।

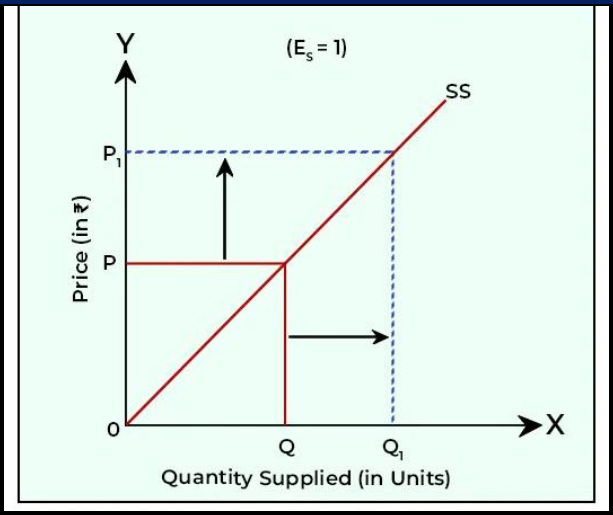

इकाई से कम लोचदार पूर्ति अथवा बेलोचदार पूर्ति (Es < 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन कीमत के अनुपातिक परिवर्तन से कम होता है तब इसे इकाई से कम लोचदार पूर्ति कहते हैं।

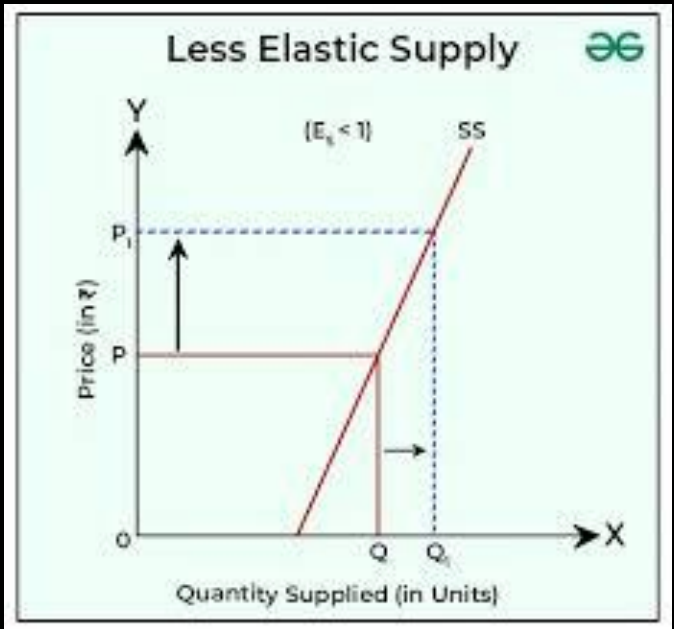

पूर्णतः बेलोचदार पूर्ति (Es = 0)

जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में कोई परिवर्तन नहीं होता तब पूर्ति की लोच पूर्णतः बेलोचदार होती है।

उदाहरण

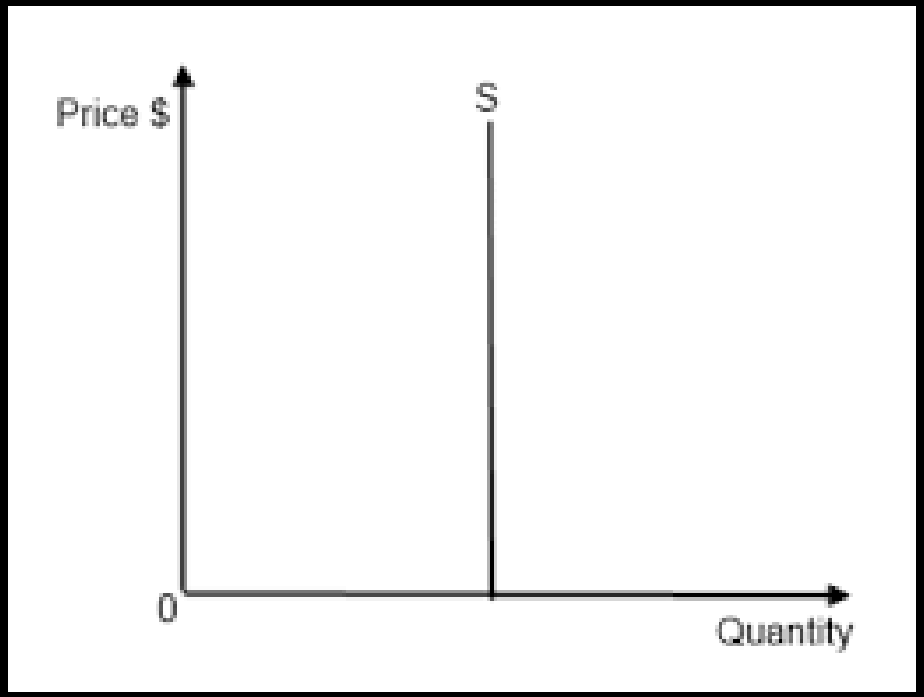

पूर्ति लोच की माप (Measure of Elasticity of Demand)

प्राय: पूर्ति की लोच मापने के लिए आनुपातिक या प्रतिशत वृद्धि का प्रयोग किया जाता है।

रीति में,

पूर्ति की लोच मापने के लिए पूर्ति में होने वाले अनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में होने वाले आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन से भाग दे दिया जाता है।

सूत्र,

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{वस्तु की पूर्ति में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

$$Es = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

उदाहरण: किसी वस्तु की ₹12 प्रति कई कीमत पर 500 इकाइयों की पूर्ति की जाती है। इसकी कीमत बढ़कर ₹15 प्रति इकाई हो जाने पर पूर्ति की मात्रा बढ़कर 650 इकाईया हो जाती है। पूर्ति की कीमत लोच के ज्ञात कीजिए।

उदाहरण किसी वस्तु की ₹5 प्रति इकाई कीमत पर 600 इकाइयों की पूर्ति की जाती है। यदि इसकी कीमत बढ़कर ₹6 प्रति इकाई हो जाती है। तो पूर्ति की मात्रा 25% बढ़ जाती है। पूर्ति की कीमत लोच ज्ञात कीजिए।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com